आपातकाल में सृजन फुलवारी

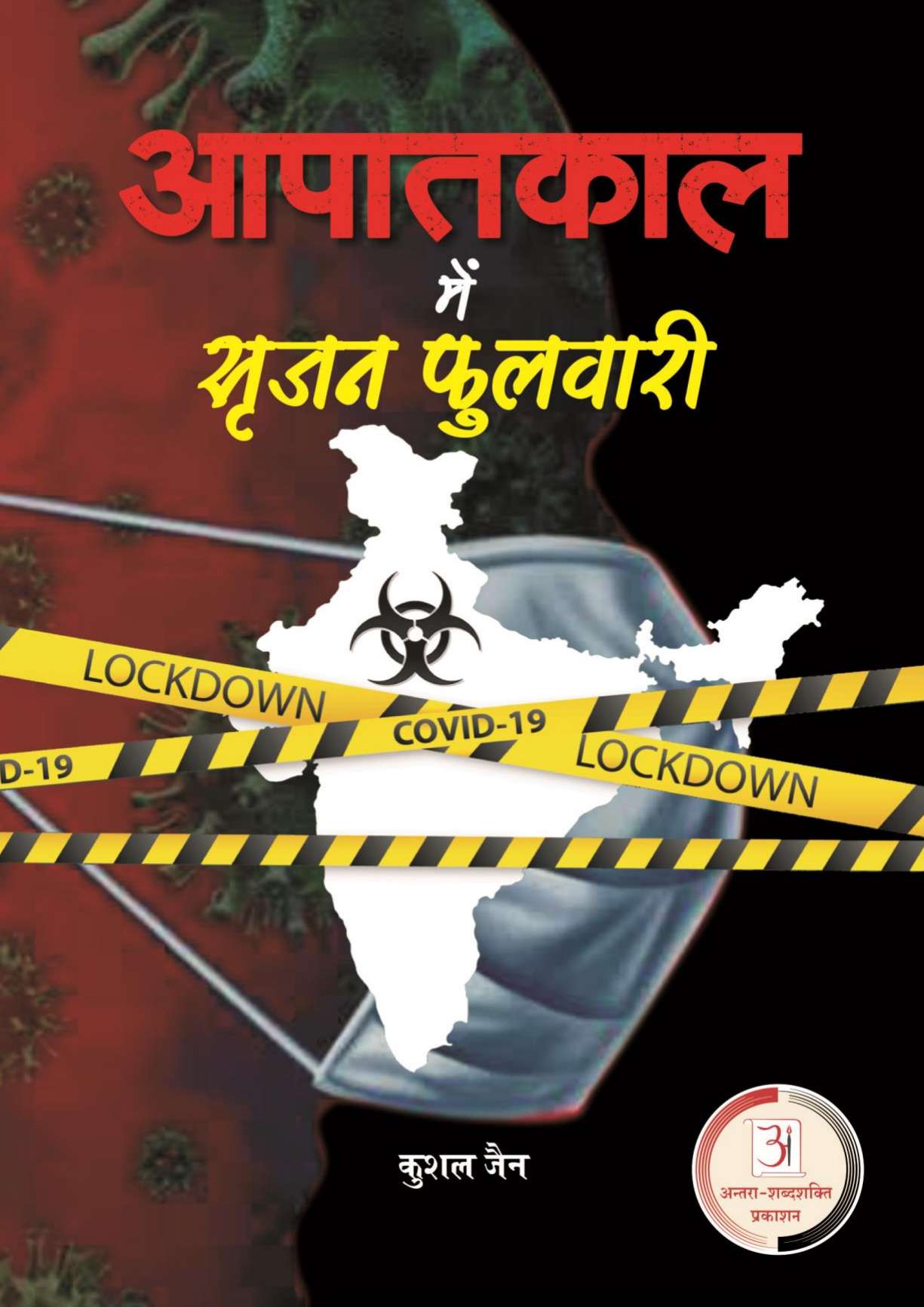

कुशल जैन

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

कुशल जैन

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-141-1

संपादक- **डॉ.** प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय - 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण - 2020, कुशल जैन

मूल्य - 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY KUSHAL JAIN

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	कश्मीर	6
2.	मां का बलिदान	7
3.	आंखों का भी ना करना भरोसा	8
4.	महिला सशक्तिकरण	9
5.	परिवार	10
6.	कोरोना का कहर	11
7.	नारी	12
8.	दिव्य भारत	13-14
9.	रोटियां चली गई	15
10.	जरूरी था	16
11.	परिणाम-ए-बैर	17
12.	कई चेहरे देखे हैं	18
13.	स्वतंत्रता	19
14.	महाभारत	20-21

कश्मीर

कश्मीर जा कोई लाए सेब, कोई लाए केसर।
मैं लाया हूं खून वीर जवानों का।
कोई देखे पहाड़, कोई खुला आसमान।
मैंने देखा है सारा, शौर्य बलिदानों का।

कोई देखे झील, जिसका स्वरूप नील।
मैं देख आया, किस्सा इतिहासों का।
कोई देखे मोर, कोई सुनहरी भोर,
मैं सुन आया क्रंदन दबे एहसासों का।

कश्मीर जो भारत का स्वर्ग कहलाता है।
कश्मीर जो भारत का मस्तक दर्शाता है।
कश्मीर जो सैनिकों पर पत्थर बरसाता है।
कश्मीर जो आतंकियों को पनाह दे जाता है।

कश्मीर जा पता चला कश्मीर एक नहीं दो हैं हिंदुस्तान में।
एक तिरंगा देख जिसे आती मुस्कान।
दूजा तिरंगा देखते ही लगे उसे फाड़ने।
एक जाए अमरनाथ चढ़ाने जल दूजा जाए जल भरे हाथों को काटने।

एक ओढ़ाए चादर फकीरो को।
दूजा भटके दरबदर बस खौफ फैलाने।
एक हो जाए बलिदानी इस मिट्टी के खातिर।
दूजा मेरे अपनों को दुश्मन से हाथ मिला के।

आज कश्मीर की हवाओं में घुटन महसूस होती है।
गद्दारों के कंजरों की चुभन महसूस होती है
आज हर हिंदुस्तानी की गर्दन, शर्म से नीचे होती है।
जब चमन जैसी घाटी, खून के आंसू रोती है।

मां का बलिदान

तलवार, चाकू, ढाल और ना कोई औजार से,
मिली है भारत को आजादी, बस मां के उपकार से।

मां जिसने अपना पुत्र मोह भी छोड़ दिया,
मां जिसने देश के खातिर बच्चे को तड़पता छोड़ दिया।

मां जिसने अपना रुख देश की ओर मोड़ दिया,
मां जिसने स्वयं के हाथों अपना कलेजा निचोड़ दिया।

जब भी मां के आंसू की एक बूंद भी टपकी है,
घर, शहर और देश ही नहीं, पूरे विश्व में ज्वाला बन भपकी है।

मां गर ना चाहती तो कोई फौलाद नहीं होता,
देश पर मिटने वाला फिर कोई औलाद नहीं होता।

मां गर ना चाहती तो कोई आबाद नहीं होता,
मां गर ना चाहती तो देश आजाद नहीं होता।

आंखों का भी ना करना भरोसा

जुबान का क्या, आंखों का भी ना करना भरोसा।
मैंने इन्हें अपनी चलाते देखा है, गिरगिट को क्या दोष देना।

मैंने तो इन्हें भी रंग बदलते देखा है
कंजरो की है जरूरत किसे
मैंने तो इन्हें विश्वासों का कत्लेआम करते देखा है
जुबां का क्या आंखों का भी ना करना भरोसा,
मैंने इन्हें भी बदलते देखा है।

मैंने इन्हें खुली रह कर सोते
और बंद पलकों से जागते देखा है
कहते हैं आंखें होती है दिल का प्रतिबिंब
पर मैंने असल तस्वीर का प्रतिबिंब भी झूठा देखा है
जुबान का क्या आंखों का भी ना करना भरोसा
मैंने इन्हें भी बदलते देखा है।

जिसे देखे बिना ना आता था इसे चैन
उनसे ही इसे नजर चुराते देखा है
हैवानियत भरी निगाहों में मासूमियत का पहरा देखा है
यूं तो चेहरे में होती हैं आंखें
पर यहां हमने आंखों का बदलता चेहरा देखा है
जुबान का क्या आंखों का भी ना करना भरोसा
मैंने इन्हें भी बदलते देखा है।

महिला सशक्तिकरण

ऐसे नापाक दरिंदों को सबक सिखाना जरूरी था
लड़कियां ना है इनके बाप की जागीर उन्हें यह बतलाना जरूरी था
जिनको मासूम लड़कियों की चीखें सुनाई नहीं आई
अब उनके क्रंदन को भी दफन हो जाना जरूरी था

आज मिला है इंसाफ निर्भया सी सैकड़ों बेटियों को
जो ढो रही थी कुछ बिगड़ैल लड़कों की गलतियों को
अब ऐसे दरिंदों को आइना दिखाना जरूरी था
ऐसे घिनौने कार्य का परिणाम बताना जरूरी था

अब सहमी बेटियों का दामन बचाना जरूरी था
बिगड़े वालों के मन से रावण हटाना जरूरी था
अब लड़कों को भी मर्यादा बताना जरूरी था
कुछ वहशी के मनमानी उसे समाज को बचाना जरूरी था

रोज जो बन रही थी अखबारों की सुर्खियां
सुर्ख़ियों से उठकर उन पर गौर फरमाना जरूरी था
दरिंदों के मन में डर बनाना जरूरी था
पीड़ितों के लिए मन में सहानुभूति जगाना जरूरी था

चाहते हो यदि तरक्की भारत की कागजों से उठकर
बेटियों को भी समान अधिकार दिलाना जरूरी था

परिवार

जब उम्र से बड़े संस्कार हो जाते हैं
मर्यादित सब कार्य हो जाते हैं
किसी ने रहकर घर पर जब अपने से
पहले दूसरों के हित का विचार होता है,
जब हर पल विचारों में सिर्फ परिवार होता है
तब सभी कार्य अपने आप हो जाते हैं।

ऐसे ही पुरुष त्रेता के राम हो जाते हैं
राम जिनके सामने सत्ता का सुख था
जिनके आगे सारा देश हाथ जोड़ सन्मुख था
उन्होंने मां के आदेश को सर्वप्रथम स्थान दिया।

छोड़कर राज पाठ और वैभव वन की ओर प्रस्थान किया।
राम के पीछे-पीछे चल सीता जी आए,
लक्ष्मण ने भी अपना भारतीय धर्म निभाएं।

इस परिवार ने संस्कार ऐसा जड़ दिया
एक भाई चले सेवा को वन में
दूसरे ने रख खड़ाऊ सिंहासन पर
अपना कर्तव्य पालन किया।

दशरथ जो सर्वशक्तिमान थे
जिनके युद्ध कौशल से ना कोई अनजान थे
उनके अपने शब्द मानो उन्हें ही ठग गए
ना चाहते हुए भी वह अपने वचन से बंद गए।

पुत्र वियोग ने उनका कर दिया ऐसा हाल
हो गए बेबस जो बने रहे अयोध्या की ढाल
वनवास पूर्ण होने से पहले राजा दशरथ की जीवन लीला खत्म हो गई
पुत्र को देखने की उनकी अंतिम इच्छा अधूरी रह गई।

गर परिवार में दूषित कलह कपटता ना होती
परिवार की फिर ऐसी दुर्दशा ना होती
प्रेम की माला यू तार-तार ना होती
बिना अस्त्र-शस्त्र और तलवार के मृत्यु हजार ना होती।

कोरोना का कहर

खौफ का फैला साया है,
चारों ओर सन्नाटा छाया है,
क्या होना है आगे सोचकर,
सबका दिल घबराया है।

चारों दिशाएं करके तबाह करोना,
अब भारत में आया है,
तभी पूरे विश्व ने घर से न निकलने की हिदायत पाया है,
आज देश बचाने का सभी ने बीड़ा उठाया है,
किसी ने रहकर घर पर तो
किसी ने घर के बाहर कदम बढ़ाया है।

आज मानो स्वयं ईश्वर धरती पर उतर आए हैं,
कहीं डॉक्टर, कहीं नर्स,
तो कहीं सिपाही बन हमें बचाए हैं,
गर तुम चाहते हो
इनके त्याग और समर्पण को तोहफा देना,
तो भूलकर भी ना घर से निकलना।

देखोगे सिर्फ एक हिदायत ही रंग लाएगी
सिर्फ गांव, शहर और देश ही नहीं
पूरे विश्व को
संक्रमित होने से बचाएगी

नारी

नारी शक्ति है, भक्ति है,
उन्नति है नारी,
ईश्वर की सबसे सुंदर अभिव्यक्ति है नारी
दुर्गा है, पार्वती है, सरस्वती है नारी
हर क्षेत्र में कर्मवती है नारी।

नारी है तो कल है
नारी खुद में ब्रह्मांड सर्कल है
नारी ही मरुभूमि पर जैसे उपवन है
खिलखिलाते देख इसे खुद मुस्कुराता जीवन है।

नारी अपनों के लिए ज्योति दुश्मनों के लिए ज्वाला है
संसार में फैला इनसे ही उजाला है
नारी अपनों के साथ पिरोने वाला धागा है
अपनों पर संकट देख इन्होंने हर सीमा को लांगा है।

नारी एक शब्द नहीं पूरी काव्य शाला है
नारी अपने आप में ही पाठशाला है
नारी के बिना संसार की कल्पना अधूरी है
यही सबसे ज्यादा जरूरी है।
बिना जताए कर्तव्य को पूरा करने की ठानी है
बस यही हर नारी की कहानी है

दिव्य भारत

भारती की दिव्यता का दिव्यगान ना करूं
तो सुंदरी के रंग रूप में डूब जाऊं क्या

फांसी चढ़ती जवानी, मां की आंखों का पथरीला पानी
कहानी वह पुरानी, लहूलुहान भूल जाऊं क्या?

ठंडा बर्फ का पानी, खाले खींचती हुक्मरानी,
दर्द में पुकार जुबानी भूल जाऊं क्या?

वह सपने नूरानी, ख्वाहिशें आसमानी,
पड़ी जो कीमतें चुकानी भूल जाऊं क्या?

बुजुर्गों की लाठी, बहन की राखी,
बच्चों के हाथों की टॉफी भूल जाऊं क्या?

क्या भूल जाऊं नदियों सा बहा खून इस मिट्टी मे
बलिदानों का वह जुनून भूल जाऊं क्या?

धरती उगलती सोने की
खान भूल जाऊं क्या?

अपना लहू दे जिसने सिंचा इस मिट्टी को
वह राणा, महाराणा और चौहान भूल जाऊं क्या?

हुआ माटी का कण-कण शर्मसार लगी थी
मां बहनों की कीमत एक दिनार भूल जाऊं क्या?

हम विश्व गुरु थे,
विश्व गुरु वाला परिधान भूल जाऊं क्या

माटी के बच्चों ने की माटी से गद्दारी
इस देश को जयचंदो ने दिए जो घाव भूल जाऊं क्या

देख बगावत अपने बच्चों की हुई
मा शर्म से पानी-पानी, भूल जाऊं क्या?

कुर्बानियों से बनी यह इमारत-ए-हिंदुस्तान
इसकी खून से सनी हर ईट भूल जाऊं क्या?

जिसके हर कण में है किस्से वीरता के महान
ऐसी पावन मिट्टी का गुणगान नहीं गाऊ क्या?

भारती की दिव्यता का दिव्यगान ना करूं
तो सुंदरी के रंग रूप में ही डूब जाऊं क्या?

रोटियां चली गई

आपके लिए तो एक आदमी गया है साहब
पर मेरे घर की तो रोटियां चली गई।
मेहंदी गई, राखी गई, रोलियाँ चली गई
मेरे घर की रंगोलियां चली गई
आपके लिए तो एक आदमी गया है साहब
पर मेरे घर की तो रोटियां चली गई।

पायल गई, बिंदिया गई, चूड़ियां चली गई
किसी की जिंदगी भर की निंदिया चली गई
निकलती थी पहले बन ठन के जो घर से
आज उसके सजने की वजह ही चली गई
आपके लिए तो एक आदमी गया है साहब
पर मेरे घर की तो रोटियां चली गई।

स्कूल गई ट्यूशन गई, स्याहियां चली गई,
बच्चों के हाथों से कॉपियां चली गई,
जिन छोटी आंखों ने देखे थे बड़े सपने
उन नन्ही आंखों की रोशनियाँ चली गई
आपके लिए तो एक आदमी गया है साहब
पर मेरे घर की तो रोटियां चली गई।

जिन्होंने दिया जीवन भर तुम्हें सहारा
आज कदम लड़खड़ाते ही उनके हाथों से लाठियां चली गई
कैसे हो पाएंगे फिर यह खड़े
इनकी तो जैसे रीढ़ की हड्डियां चली गई
आपके लिए तो एक आदमी गया है साहब
पर मेरे घर की तो रोटियां चली गई।

जरूरी था

इन आतंकी हमलों पर लगाम लगाना
जरूरी था,
इनके मखमल गड्ढों को शमशान बनाना
जरूरी था।

इनको लगता था यह अपनी मनमानी करते जाएंगे
अब इनके मन को भी हानि पहुंचाना
जरूरी था
इन आतंकी हमलों पर लगाम लगाना जरुरी था।

ख्वाब का धंधा करने वाले खुद हमसे ख्वाब खा रहे हैं
हम इनके पीछे क्या पडे यह रोज ठिकाने बदलते जा रहे हैं
आतंकियों को पालने वाला खुद सुन बैठा है
आज पूरे विश्व में इनसे हाथ झटका है

बहुत झुक गए इनके आगे
अब इन्हें झुकाना
जरूरी था
हमारे जाबाज अभिनंदन को वापस लाना जरूरी था

परिणाम-ए-बैर

क्यों आज भी हर हाथों में लहू दिखता है
हर आदमी अंदर से बे सकून दिखता है
जब नहीं आती नींद दोनों को ही रातों में
तो आदमी-आदमी से बाहर क्यों रखता है

यह अहंकार है जो हमें एक दूसरे से दूर रखता है
वरना प्यार तो आसमान भी करता है जमीन से
तभी उसे तपता देख खुद बरस पड़ता है

फासले नहीं बनाते दिलों में दूरियां
तभी कोई नीलू दूर होकर भी साथ
और कोई आपके साथ होकर भी आंखों से ओझल रहता है

जानते हो क्या परिणाम-ए-बैर आएगा
अर्थीया उठेगी वहां की
और कंधा हमारा दुख जाएगा

कई चेहरे देखे हैं

इतने सालों में कई चेहरे देखे हैं
हैवानियत भरी निगाहों में

मासूमियत के पहले देखे हैं
कड़ी चमकती धूप में

बारिश और ओले देखे हैं
यूं तो सबका होता है

एक ही चेहरा
पर हमने लगे यहां

लोगों के चेहरे पर चेहरे देखें हैं
इतने सालों में कई चेहरे देखे हैं

स्वतंत्रता

सोचो भारत माता पर क्या बीती होगी
जब उसने अपने ही तो खड़े होते देखी होगी
अपने झर-झर बहता लहू को देख रही होगी
क्या है यह मेरे ही बच्चे खुद से ही पूछी होगी

उसकी तो मानो जिस्म से जान लव हो गई
जीवन जीने की इच्छा ही खत्म हो गई
अभी हुई थी आजाद लो फिर गुलाम हो गई
अपने ही बच्चों के हाथों नीलाम हो गई

उसे क्या पता था उसका पुत्र मोह यह फल लाएगा
कल से एक हिस्सा हिंदुस्तान तो दूसरा पाकिस्तान कहलाएगा
आसमान में बैठे शहीद होंगे सोचते अच्छा होता
हम गुलाम ही होते भले आजाद हवा में हम सांस ना लेते

पर यू एक दूसरे के गुनहगार तो ना होते
सभी वीर शहीदों को चुकानी पड़ी कीमत आजादी पाने की
यू हमारा देश आजाद तो हो गया कभी सोचा है
इसे पाने में कितना कुछ हमसे छीन गया

कर दिए टुकड़े घरों के
दूर हो गए भाई से भाई
इतने सालों बाद भी बस करवटें बदलते रहते हैं
चैन की नींद किसी को ना आई

महाभारत

कुरुक्षेत्र में महा समर का दृश्य बड़ा अलौकिक था
अश्व, हाथी और बाहुबल से सना सारा प्रांगण था

दोनों ही पक्ष एक दूजे से परिचित थे
देख इसे अर्जुन मन ही मन में विचलित थे
एक ही पल में अर्जुन आंखों से ही पूरा रन घूम गया
देख समक्ष अपने परिजन को गांडीव हाथ से छूट गया

देख दशा अर्जुन की माधव मन ही मन भूल गए
होकर समक्ष अर्जुन से पूछा क्या अपना धर्म भूल गए
कहा पार्थ ने हूं मैं छत्रिय पर मुझे रक्त से प्यार
नहीं परिवार मारकर गद्दी मिले तो सिंहासन स्वीकार नहीं

कहे पार्थ दादा भीष्म ने गोद खिलाया है
अस्त्र-शस्त्र का का सारा ज्ञान गुरु द्रोण से पाया है
हम पांचों पर प्यार लुटाया कुंती मात हमारी ने
कमी नहीं कोई छोड़ी राजमाता गांधारी ने

तेरह साल रहे इनसे दूर अब और कैसे तरसाऊ
जिनसे पाया ज्ञान जगत का उन पर बाण कैसे बरसाऊ
देख व्याकुलता अर्जुन की केशव भी बोल पड़े
जब हुआ द्रोपदी चीर हरण तब क्यों थे भीष्म मौन खड़े

माना सब नहीं पर एक ने तो बोला होता
देख अन्याय अपने कुल पर किसी ने तो मुंह खोला होता
सुन इसे मन में अर्जुन के जोश भरा
देख अर्जुन को माधव ने गीता ज्ञान शुरू करा

कहे केशव उठ पार्थ अपनी आंखों को मिच जरा
उठा गांडीव हाथों में प्रत्यंचा को खींच जरा
बता दे सदन को अपनों के दुख से बड़ी कोई पीर नहीं
और इस पूरे समर में तुझ से बड़ा कोई वीर नहीं

कहे अर्जुन हूं मैं विचलित मेरा अंधकार दूर करो
इधर-उधर की बातें छोड़ो अपना वास्तविक रूप धरो
सुनकर इतना सब माधव का संयम डोल गया
क्षण भर में उनका कद आकाश से ऊंचा हो गया

कहे माधव सुन पार्थ मैं ही इस धरती का कर्ताधर्ता हूं
तू क्यों है घबराता तेरी चिंता में करता हूं
देख त्रिलोकी को साथ अपने अर्जुन भी सज हो गए
फिर हुआ युद्ध शुरू दोनों आपस में भिड़ गए

अश्व, सैनिक और हाथी की ऐसी गर्जन थी
सैकड़ों लाशें हो रही विसर्जित थी रक्त वीरों का
मानो नदिया बन बहता था
वह हर रोज अपनों के हाथो अपनों का कत्ल होता था

फिर आया स्वर्ण दिवस, अधर्म धर्म से ध्वस्त हुआ
दिख रहा था मुकुट युधिष्ठिर के मस्तक सजा हुआ
आज चारों दिशाओं में पांडव के यश का शोर हुआ
पर यह भी सब जानते थे, यह सब है केशव का किया हुआ

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

कुशल जैन

Email- Kushaljain.bgt@gmail.com
Mobile - 8319397202

जिस प्रकार एक को रोना नामक आज पूरे देश में यह आपातकालीन बीमारी का प्रवेश हुआ है जिसकी चपेट में हमारा देश ही नहीं पूरा विश्व जकड़ चुका है ऐसे समय में अंतरा शब्दशक्ति मंच के माध्यम से हम सब मानो एक धागे में पिरो गए हैं, इस संगठन से जुड़ना मेरे लिए बहुत गर्व की बात है, सबसे बड़ी चीज जो यह मंच आपको प्रदान करता है वह अपने विचारों को स्वतंत्रता से दूसरों के सामने व्यक्त कर पाना, इस संगठन में बहुत से बड़े-बड़े कवि कवित्री एवं लेखन कर्ताओं के साथ जोड़कर नवोदित हो रहा है छोटे कवि कवित्रीयों को अनुभवी कवियों द्वारा मार्गदर्शन का मौका मिला है, मैं अंतरा शब्दशक्ति का आभार मंद हूं कि उन्होंने मुझे इस संगठन में जुड़ा और मुझे अपनी बात रखने का मंच प्रदान किया।

मैं एक बार फिर अंतरा शब्द शक्ति परिवार का तहे दिल से शुक्रिया अदा करता हूं।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-141-1

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/